ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i3.252

विवेकी राय के उपन्यासों में सामन्ती जीवन मूल्यों के वर्चस्व का अध्ययन

डॉ. वर्षा रानी

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, द .आई.सी.एफ.ए.आई.विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Email id- varsharani@iuraipur.edu.in

सारांश

विवेकी राय ग्रामीण सामाजिक और वैचारिक परिस्थितियों को उजागर करने वाले कथाकार कहे जाते हैं। इनके उपन्यासों में सामन्ती जीवन मूल्यों का वर्चस्व दिखाई देता है जिसमें समाज के उच्च, जमींदार या कुलीन वर्ग की विचारधारा, संस्कृति और परम्पराएँ, बाकी समाज पर अपना दबदबा बनाए रखती हैं। इसमें वफ़ादारी, पदानुक्रम, जातिवाद और परम्पराओं का पालन अनिवार्य माना जाता है, जिससे निचला वर्ग शोषित रहता है । यह एक सांस्कृतिक वर्चस्व है जो समानता के बजाय दासता और प्रदेश विशेष की सामाजिक स्थिति को अभिव्यक्त करता है। जीवन के समग्र चित्रण को लेखक परिवेश की सच्चाई को बड़ी बारीकी से समझते हैं चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा गरीबी किसी भी तरह की समस्या हो सभी को नजदीक से चिंतन करते हैं । इनके उपन्यास बबूल, पुरुष पुराण, लोकऋण, श्वेतपत्र, सोनामाटी, समर शेष है, नमामि ग्रामम्, मंगल भवन, अमंगलहारी आदि हैं। जिसमें राजनीतिक धोखाधड़ी, बेइमानी, तिकड़मी खेल, कब्जा, क्रूरता, आदि हथकंडे अपनाकर कृषकों एवं साधारण जनों का खुले आम शोषण करते रहे।

कुंजी शब्द- *सामन्ती जीवन मूल्य, वर्चस्व, पदानुक्रम, जातिवाद, दासता,शोषण, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, गरीबी, धोखाधड़ी, बेइमानी, तिकड़मी खेल ।*

प्रस्तावना

विवेकी राय का जन्म 19 नवम्बर सन् 1924 को उ.प्र.के बलिया जिले के भरौली ग्राम में हुआ था। अध्ययनशीलता के गुण जन्म से ही झलकते थे। प्रारम्भिक शिक्षा पैतृक गाँव सोनवानी (गाजीपुर) उत्तर प्रदेश में संपन्न हुई। प्रारंभ में कुछ समय खेती बारी के कार्यों को करने के बाद अध्ययन- अध्यापन के कार्य में संलग्न हो गये। एम.ए. हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी और पी.एच-डी. की उपाधि महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ से प्राप्त की। अपने ही गाँव की प्राथमिक शाला में अध्यापन कार्य किए। उनका व्यक्तित्व सादगीपूर्ण आकर्षक एवं गरिमा से अभिपूरित है। उनके सभी उपन्यासों में गाँव के ही पात्र, समस्याएँ,सुझाव, परिस्थिति, लोक संस्कार सभी की छाँव उभर कर आ रही है।

साहित्य समीक्षा

'बबूल' उपन्यास में जमींदारी व्यवस्था का यथार्थ दिखाई देता है। दलित वर्ग किस प्रकार सामंतों और जमींदारों के शोषण का शिकार होते हैं। जमींदारों का सभी वर्गों के प्रति व्यवहार को दर्शाया गया है जिसमें गरीब दलित को किसी भी प्रकार की समस्या होने से उसके बातों को अनसुना कर दिया जाता है।[1] वह कई प्रकार के शोषण का शिकार होते हैं। इस उपन्यास के पात्र महेसवा, मगरूआ और उसकी माँ का वार्तालाप होता है माँ कहती है "चार दिन से बाबू साहब करेजे में छेद रहे हैं कि चल हल उठा। जैसे तीन

ही दिन में डीह टूट गया हो। अपने खातिर दाई जैसे, आन खातिर कसाई जैसे।" अर्थात् महेसवा के बीमार होने पर वह जब खेत में हल चलाने नहीं जाता है तो जमींदार उससे हल चलाने को बोलता है। उस पर उसकी पत्नी अपनी भावनाओं को व्यक्त करती है।[2]

'लोकऋण' उपन्यास में जमींदारों के व्यवहार का वर्णन किया गया है जिसमें उनसे जबरन कार्य कराया जाता है। उनको बंधुआ मजदूर के रूप में रखा जाता है आजीवन जमींदारों की सेवा का कार्य करते हैं।[3] जमींदारों से कर्ज लेते हैं और वह कर्ज की पूँजी बढ़ती जाती है जिसको न ही वह मजदूरी चुकता कर पाता है न ही उनके चंगुल से बाहर निकल पाता है। जिससे अनेक प्रकार की यातनाएं जीवन भर सहते रहते हैं।[4] त्रिभुवन नामक जमींदार के यहाँ कालिया नामक हरिजन हलवाहे का कार्य करता है जिस पर एक वाक्य दृष्टव्य है "अरे कालिया हरामजादा कहाँ है रे, साले खा पीकर मोटा हो गया है। हजार-हजार रुपये के बैल तुम्हारे दामादों से बिहनवाने के लिए द्वार पर बँधे है।" त्रिभुवन एक क्रूर व्यक्ति है।[5]

'सोनामाटी' उपन्यास में सामंती जीवन के वर्चस्व का वर्णन किया गया है। सामंत वर्ग अपना वर्चस्व सम्पूर्ण ग्रामीण जनता पर स्थापित करना चाहते हैं। ये वोट की राजनीति करते हैं। शिक्षा जनहित के कार्यों के नाम पर जनता का हक हजम कर जाते हैं। चुनाव के समय लुभावने भाषण प्रचार प्रसार करते हैं।[6] इनकी पहुँच ऊपर तक होती है। सम्पूर्ण सत्ता इनके हाथों में होती है। पुलिस प्रशासन को खरीद लेते हैं। नेता वर्ग को वोट देकर खुश करते हैं और पुलिस को पैसे देकर खुश करना, उन्हें भली-भाँति आता है। सबकी मिली-भगत से सामंत वर्ग अपने हर कार्यों को कर लेता है। वे ग्रामीण सरकारी योजनाओं वृद्धा पेंशन, गरीबों को सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं, लघु कृषक वर्ग के हक में आने वाली योजनाओं, पशु तस्करी करना ये सब उनके बाये हाथ का खेल हैं इस संदर्भ में यह कहना महत्वपूर्ण है कि"इस वर्ग के लोग सामंतवाद के अपषिष्ट स्वरूप है जिनकी पहुँच काफी ऊपर तक होती है।[7] इनके हाथ सत्ता के गलियारे तक लम्बे होते हैं ये सरकारी अफसरों और पुलिस को नोट द्वारा तथा नेताओं को वोट द्वारा संतुष्ट करते हैं बदले में इन्हें तस्करी करने, वृद्धावस्था का पेंशन हजम कर जाने ।" सामन्त वर्ग की नीति ग्रामीण जन के प्रति बहुत ही कठोर थी, ग्रामीण लोगों के सुख उनके दुःख को उनके जीवन के अस्तित्व को समझने के लिए उनके पास समय नहीं था।[8] ग्रामीण सम्पूर्ण जीवन भर सामन्त वाद के चंगुल में फँसा रहता था। सामंत वर्ग के लोग अपने वैभव सम्पन्नता को पैतृक उत्तराधिकार में मिली जागीर समझते थे। इनके शासन में अराजकता बेईमानी, घूसखोरी, शोषण का बोल-बाला था।[10] किसी नियम कानून के आधार पर कार्यों को महत्व न देकर मनमानी की जाती थी। शासन को अपने हाथ में रखते थे अपने हिसाब से शक्तियों का प्रयोग करना, जनता को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता था।[11] जनता के ऊपर प्रलोभन और शक्ति का प्रयोग करके अपना कार्य कराते थे। भोली जनता उनके बताये रास्ते पर चलकर उनके हाथ की कठपुतली बनकर रह जाती थी।[9] उनको अपने बुद्धि का प्रयोग करने को कोई अवसर नहीं दिया जाता था। अपने मन की बात नहीं कर सकते थे। सरकार ग्रामीण जन के स्तर को सुधारने हेतु जिन योजनाओं का निर्गमन करती है वह जनता तक पहुँचने के पहले सामंत वर्ग के हाथ में आकर लुप्त हो जाती है। जनता को भनक तक नहीं लगती है। चुनाव के समय इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है जनता के ऊपर अपना प्रभाव स्थापित करते हैं जनता से अपने अनुसार कार्य कराते हैं।

भोजपुरी संस्कृति में इस वर्ग को 'परजा' कहा जाता है। जिनको कार्य के बदले 'मजदूरी' दी जाती है जिसको सामंत लोग उचित तरीके से चुकता नहीं करते हैं। सामंतों के द्वारा नीची जाति को अत्यधिक प्रताड़ित किया जाता है वे सोचते हैं कि इनको सताना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है ये हमें जागीर में मिला है। जिसकी वजह से हम जीवन भर बैठकर नीची जाति पर रौब जमा सकते हैं। नीची जाति के लोगों की अवहेलना की जाती है। "छोटी जाति वाले कमीने कहे जाते है अर्थात् कमाकर खाने वाले। यानी उनके पास पुष्तैनी जमीन जगीर या ऐसी हैसियत नहीं है जिसके बल पर वे बैठे-बैठे खा सके। उनका काम है श्रम करना। मजदूरी करना । ये बड़े लोगों की जमीन में बसे हैं और उनकी प्रजा कहलाते हैं।"

सामंतवादी शासन व्यवस्था

सामंतवादी शासन व्यवस्था में प्रजा के ऊपर शासन दिखाना ही सामंती सुख कहा जाता है अर्थात् प्रजा के ऊपर जितना अधिक अधिकार जताते हैं उनको बेइज्जत करते हैं, मजदूरी नहीं देते, मनमानी काम कराते हैं उतना ही उनको सुकून मिलता है।[12] सामंतवादी शासन व्यवस्था को लेकर विवेकी राय अपने उपन्यासों में बड़ी यथार्थता के साथ उल्लेख किये हैं। सामन्त ऐसे होते है जो सम्पूर्ण समाज को अपनी मुट्ठी में रखना चाहते हैं प्रजा का कोई अस्तित्व नहीं होता है। प्रजा केवल कार्य करने की मशीन है उनका जन्म केवल कार्य करने के लिए शारीरिक श्रम करने के लिए हुआ है।[13] उनको अपने दिमाग का प्रयोग नहीं करना है। नीची जाति के लोगों की कोई इज्जत नहीं होती है। नीची जाति के लोगों को सताना ही उनका गौरव है। उनको शारीरिक, मानसिक, आर्थिक सभी तरह के कष्ट भुगतना पड़ता है। एक वर्ग ऐसा है जो दिन भर मेहनत मजदूरी करता है लेकिन वह गरीब है उसका जीवन स्तर निम्न हैं उसको अपनी मेहनत की कीमत नहीं मिलती है। वही पर एक वर्ग है जो बाबू है काम कुछ नहीं करता लेकिंन एक सुखी जिंदगी जीता है।[14]

'समर शेष है' उपन्यास के जमींदारों के राजनीतिक टिकड़मी, बेइमानी, गरीबों की जमींन, गरीबों के नाम से सरकारी योजनाओं के पैसे को हजम करना, अनेक प्रकार के अत्याचार करना जिससे ग्रामीण लोगों को गाँव भी छोड़ना पड़ता है।[15] इस उपन्यास में चकबंदी को लेकर विस्तृत चर्चा की गयी है। एक उदा. दृष्टव्य है गैर कानूनी तरीके से जानकीनाथ द्वारा जमीन पर कब्जा कर लिया जाता है "वह उसी गाँव के एक सोनार की जमींन है दस साल पहले उसे बाबू साहब ने किसी बात पर इतना मारा कि गाँव छोड़कर वह असम चला गया।[16] चकबंदी में धारा बावन के प्रकाषन के बाद कागज में तो बाबू साहब अपना नहीं बना सके, मगर कब्जा उन्हीं का है।"

उपसंहार

इस प्रकार विवेकी राय ने अपने उपन्यासों में जमींदारी व्यवस्था के अत्याचार को लेकर अनेक उपन्यास लिखे हैं। उपन्यासों में जमींदारी प्रथा के शासकों के अत्याचार, गरीबों का शोषण आदि को लेकर लिखा गया है। जमींदारों के व्यवहार, बर्ताव से तंग जनता गाँव भी छोड़ने को मजबूर हो जाती हैं जिससे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।[17] ग्रामीण जनता अनेक समस्याओं का सामना करती है फिर भी जमींदारों के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आता है। तानाशाही शासन चलाते हैं और अपना वर्चस्व कायम करने हेतु कुछ भी करते हैं। गरीबों को सुखी नहीं देखना चाहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों गरीबों का जन्म समस्याओं का सामना करने के लिए होता है। शोषित वर्ग को मारना पीटना गाली देना यह आम बात हो गयी थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

[1]. राय, विवेकी, बबूलअनुराग प्रकाशन :वाराणसी ., प्रथम संस्करण, 1967.

[2]. राय, विवेकी, बबूलभारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन :दिल्ली ., प्रथम संस्करण, 1975.

[3]. राय, विवेकी, श्वेतपत्रअभिरुचि प्रकाशन :वाराणसी ., प्रथम संस्करण, 1976.

[4]. राय, विवेकी, सोनामाटीप्रभात प्रकाशन :दिल्ली ., प्रथम संस्करण, 1983.

[5]. राय, विवेकी, समर शेष है .दिल्लीप्रभात प्रकाशन :, प्रथम संस्करण, 1988.

[6]. राय, विवेकी, मंगल भवनप्रभात प्रकाशन :दिल्ली ., प्रथम संस्करण, 1994.

[7]. राय, विवेकी, नमामि ग्राममविद्या विहार प्रकाशन :दिल्ली ., प्रथम संस्करण, 1997.

[8]. राय, विवेकी, अमंगलहारीज्ञान गंगा प्रकाशन :दिल्ली ., प्रथम संस्करण, 2000.

[9]. राय, विवेकी, लोकऋण, वाराणसीविष्वविद्यालय प्रकाशन :, प्रथम संस्करण, 1977 .

[10]. राय, विवेकी, देहरी के पारग्रंथ अकादमी :दिल्ली ., प्रथम संस्करण, 2003.

[11]. श्याम सुंदर दासकाशी नागरी प्रचारिणी सभा .हिन्दी शब्द सागर ., प्रथम संस्करण 1922, पृष्ठ संख्या-10.

[12]. सत्यकामअभिरुचि प्रकाशन :दिल्ली .माटी की महक ., 1994, पृष्ठ संख्या -35-36 .

[13]. मिश्र, रामदरशराजकमल :दिल्ली .एक अंतर्यात्रा :हिन्दी उपन्यास . प्रकाशन, संस्करण 2016, पृष्ठ संख्या -170.

[14]. तिवारी, रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य साहित्यविश्वविद्यालय प्रकाश :न, वाराणसी.

[15]. मिश्र, रामदरश, हिन्दी उपन्यासएक अंतर्यात्रा :, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

[16]. राय, विवेकी, आधुनिक हिन्दी उपन्यास.विविध विमर्श :

[17]. आंजनेय, अनिलकुमार, डॉ. विवेकीरायः जीवन वृत्त और उपलब्धियाँ, अखिल भारतीय अंतर जनपदीय परिषद.

Cite this Article:

वर्षा रानी (2026). विवेकी राय के उपन्यासों में सामन्ती जीवन मूल्यों के वर्चस्व का अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), 4(3), 123–126.

Journal URL: *https://ijmrast.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i3.252*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.

© The Author(s) 2026. IJMRAST Published by Surya Multidisciplinary Publication.